एग्री मैगज़ीन
(कृषि लेखों के लिए अंतरराष्ट्रीय ई-पत्रिका)
वर्ष: 01, अंक: 05 (दिसम्बर, 2024)
www.agrimagazine.in पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री मैगज़ीन, आई. एस. एस. एन.: 3048-8656

लाभकारी खेती कैसे करें ?

(डॉ. प्रमोद कुमार यादव[1], डॉ. सुनीता श्योराण[1], डॉ. धर्मप्रकाश[1], डॉ. जितेन्द्र कुमार[1] एवं *अंकित[2])
[1]चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, क्षेत्रीय अनुसंधान केन्द्र, बावल, हरियाणा, भारत
[2]चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, हरियाणा, भारत
*संवादी लेखक का ईमेल पता: ankityadav13419@gmail.com

भारत एक कृषि प्रधान देश होने के बावजूद भी यहां का किसान कृषि को अलाभकारी व्यवसाय मानने लगा है। मध्यम व छोटे किसान धीरे–धीरे खेतों से पलायन शुरू कर रहे हैं। आज स्थिति यह है कि अनाज, दलहन व तिलहन भारत की प्रमुख फसल होने के बावजूद हमें इनका आयात करना पड़ रहा है। किसानों के लिए कृषि उत्पादन में लगने वाली लागत में वृद्धि व अनाज के मूल्य में स्थिरता चिंता का विषय बनी हुई है। इसके अलावा रसायनों के असंतुलित उपयोग से भी मृदा की उर्वरा शक्ति कम होती जा रही है तथा कृषि को घाटे का सौदा समझा जा रहा है । परन्तु किसान यदि कुछ लाभकारी वैज्ञानिक विधियां अपना लें तो लागत कम करने के साथ–साथ अधिक उपज लेकर कृषि को लाभकारी व्यवसाय बनाया जा सकता है।

मृदा स्वास्थ्य की जांच : पौधों को आवश्यक तत्वों की पूर्ति मृदा द्वारा होती है तथा विभिन्न प्रकार की मृदा के भौतिक गुण व तत्वों को प्रदान करने की क्षमता भिन्न होती है। इसलिए एक ही फसल को अलग–अलग तरह की मृदा में उगायें जाने पर उपज में अन्तर पाया जाता है। अतः मृदा परीक्षण के आधार पर ही फसल का चयन या रासायनिक उर्वरकों का प्रयोग करें।

मौसम की जानकारी: कृषि मौसम की जानकारी अत्यन्त आवश्यक है। इसके लिए किसान भाई मोबाईल, टेलीविजन, रेड़ियो एवं अखबारों के माध्यम से मौसम की सही जानकारी ले सकते हैं तथा उसी के अनुसार ही फसलों का चयन करें।

प्रमाणित बीज का प्रयोग : रोगरहित अच्छा बीज बोने से ही अच्छी फसल प्राप्त होगी। उन्नत व प्रमाणित किस्म के बीज प्रयोग करने से फसल की उपज में 10 से 15 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी हो जाती है।

बीज उपचार: बीजों को उचित दवा से उपचार करके हम फसल में लगने वाली बीमारियों से छुटकारा पा सकते हैं तथा फसल पर आने वाला खर्च भी कम कर सकते हैं। जिन फसलों की हम नर्सरी द्वारा उगाते हैं वहां भी हमें नर्सरी लगाने से पहले बीज का उपचार अवश्य कर लेना चाहिए, क्योंकि अगर नर्सरी स्वस्थ होगी तो फसल भी अच्छी होगी।

बुवाई : सही समय पर फसल की बुवाई करना अति आवश्यक है। क्योंकि देर से बुवाई करने से उपज में कमी हो जाती है। यदि किसी कारणवश हमें बुवाई के समय में अंतर लाना हो तो अगेती/पिछेती किस्मों का चयन करें ताकि पूरा लाभ प्राप्त हो सके।

बीज की मात्रा व दूरी : बीज की उचित मात्रा रखने पर हम खर्च कम कर सकते हैं क्योंकि उचित दूरी व संख्या में पौधे लगाने से पौधों की बढ़ोत्तरी व उपज अच्छी होती है।

फसल चक्र अपनाना : किसान भाई अगर फसल चक्र अपनायें तो कई बीमारियों व कीटों से फसल की सुरक्षा कर सकते हैं। इसके अलावा अगर दलहनी फसलें फसल चक्र अपनाया जाए तो मृदा में नत्रजन की वृद्धि के साथ–साथ भूमि की उपजाऊ शक्ति को भी बढ़ावा मिलता है।

सहयोगी फसलें : अगर किसान भाई फसल के साथ–साथ अन्य फसल भी लगायें जैसे मक्का की दो पंक्तियों के बीच में सोयाबीन की एक कतार या गेहूं के साथ चना लगायें तो अतिरिक्त आय होगी व किसी कारणवश एक फसल खराब होने की स्थिति में नुकसान की भरपाई कर सकते हैं ।

फसल विविधीकरण : परंपरागत फसलों से थोड़ा हटकर किसान भाई बाजार की उपलब्धता के अनुसार फल, सब्जी, मसाले, औषधीय व सुगन्धी फसलों की खेती कर अधिक आय प्राप्त कर सकता है। इसके अलावा मशरूम उत्पादन, मुर्गी पालन, मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन एवं रेशम कीट पालन, वर्गीकम्पोस्ट जैसे अन्य कृषि कार्य कर सकता है। इनसे अतिरिक्त आमदनी के अलावा इनके अवशेषों का भी उचित प्रयोग कर उत्पादन लागत में कमी कर सकते हैं।

खादों व उर्वरकों का उपयोग : कुछ खादों को किसान स्वयं ही अपने खेत या घर के पास तैयार कर सकता है। किसान अपने किसी भी नजदीक के कृषि विज्ञान केन्द्र या कृषि विभाग से संपर्क करके देशी खाद तैयार करने की तकनीक की

जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। कम्पोस्ट, वर्मी कम्पोस्ट, गोबर गैस सलरी, हरी खाद नील हरित काई इत्यादि कुछ स्वयं तैयार की जाने वाली खादों का उपयोग करके किसान मिट्टी की उर्वरा शक्ति बढ़ाने व अधिक उपज लेने के साथ–साथ रासायनिक खादों में खर्च किये जाने वाले व्यय को भी कम कर सकते हैं।

उचित जल प्रबंधन : कम वर्षा वाले क्षेत्रों में किसान उन फसलों को अधिक लगायें जिन्हें पानी की कम जरूरत पड़ती हो । गहरी जुताई और मेढ़बन्दी करने से भी खेतों में पानी रोका जा सकता है। इसके अलावा जल संचयन करके भी किसान फसल में सिंचाई दे सकता है। आधुनिक तरीकों में ड्रिप सिंचाई व स्प्रिंकलर सिंचाई तकनीक का भी फसल व खेत के अनुरूप इस्तेमाल कर सकते हैं।